नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़- गोरखपुर
मो. : 7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 04.02.2018

प्रकाशनार्थ

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और भारत की सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषा है। सभी का महत्व हमें स्वीकार करना होगा। आजादी से पूर्व भारत में हिन्दी, पत्रकारिता और विश्वविद्यालय तीनों उत्कर्ष पर थे। आजाद भारत में उनका निरन्तर अपकर्ष हुआ है। हम अपनी भूमिका तलाशें, जवाबदेही के साथ प्रयत्न करें। हिन्दी को न्याय मिल जाएगा। इसमें कोई सन्देह नही कि हिन्दी दुनिया की दो–तीन महत्वपूर्ण भाषाओं में एक है। हिन्दी के लिए समर्पित तपस्वी भी हैं, किन्तु हिन्दी के नाम पर लूटकर घर भरने वाले भी हैं। हमें वास्तविकता से रूबरू होकर हिन्दी के लिए कार्य करना होगा। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज जंगल धूसड़ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'स्वतंत्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो0 रामदेव शुक्ल ने कही।

प्रो0 रामदेव शुक्ल ने कहा कि हिन्दी अपनों द्वारा ठगी गयी है। अपनों से आहत हुयी है। अपनों में से कुछ ने जान बूझकर तथा कुछ ने अनजाने में हिन्दी का नुकसान किया। हिन्दी का विकास आज समर्पण माँगता है। हिन्दी के विकास के लिए हिन्दी भाषियों को संकल्पित होना होगा। दुर्भाग्य से हिन्दी का नुकसान भारतीय राजनीति ने भी बहुत किया। यद्यपि कि हिन्दी 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की भाषा थी । 1857 से लेकर 1947 तक हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने पर किसी को संदेह नही था, हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने पर किसी प्रकार का संकट नही था। आजादी के साथ हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के अस्तित्व एवं उसके विकास पर ग्रहण लग गया।

क्रमशः 2

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़- गोरखपुर
मो. : 7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 04.02.2018

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के माननीय कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह ने कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। पूरे देश में बोले जाने एवं समझे जाने के आधार पर राष्ट्रभाषा भी है, क्योंकि सरकारें राजभाषा बनाती हैं, किसी भाषा को राष्ट्रभाषा जनता बनाती है । तथापि हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाना होगा, उसे गुणवत्ता की भाषा बनाना होगा, इसे उद्योग–व्यापार की भाषा बनाना होगा।

विशिष्ट अतिथि उत्तर–प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि हमें अंग्रेजी भाषा के साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा। भारत की शासन व्यवस्था और लोक–सेवा आयोग से अंग्रेजियत को समाप्त करने की लड़ाई लड़नी होगी। हिन्दी का संघर्ष भारत की भाषाओं से नहीं, अंग्रेजी भाषा से भी नहीं अपितु अंग्रजियत से है। भाषा के अस्तित्व की लड़ाई इसलिए आवश्यक है कि भाषा संस्कृति, साहित्य चिंतन, दर्शन, जीवन–मूल्य की प्रवाहिका है, वह समाज की पहचान है।

समापन समारोह में प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। संकलन डॉ. आरती सिंह ने किया। संचालन डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. रमेश चन्द्र त्रिपाठी, प्रो. सुमित्रा सिंह, प्रो. पवन अग्रवाल, डॉ. अनुपम आनन्द, डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय, डॉ. सिद्धार्थ शंकर, डॉ. सर्वेश पाण्डेय, डॉ. गायत्री सिंह, डॉ. सुनीता सिंह, डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. नीरज सिंह, श्री मनोज चन्द, श्री दीपक शाही, डॉ. अनामिका, श्री अशोक कुमार शुक्ल इत्यादि विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी